International Journal of Leading Research Publication (IJLRP)

E-ISSN: 2582-8010 ● Website: www.ijlrp.com ● Email: editor@ijlrp.com

आधुनिक हिंदी कविता में स्त्री-अस्मिता की अभिव्यक्ति: निराला और महादेवी वर्मा की स्त्री-चेतना का तुलनात्मक विश्लेषण

Manoj Dandotiya[1], Dr. Nishu Sharma[2]

[1]Research Scholar, Arni School of Arts And Humanities
[2]Assistant Professor, Arni School of Arts And Humanities

सार

आधुनिक हिंदी कविता में स्त्री-अस्मिता का प्रश्न एक केंद्रीय विमर्श के रूप में उभरकर सामने आया है, जिसमें स्त्री की सामाजिक, सांस्कृतिक और मनोवैज्ञानिक स्थिति का बहुआयामी चित्रण किया गया है। प्रस्तुत शोध-लेख का उद्देश्य सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' और महादेवी वर्मा की काव्य-रचनाओं में स्त्री-चेतना के स्वरूप का तुलनात्मक अध्ययन करना है। निराला की कविता में स्त्री एक विद्रोही, संघर्षशील और सामाजिक रूढ़ियों के विरुद्ध खड़ी होने वाली सशक्त इकाई के रूप में उभरती है, जबकि महादेवी वर्मा की कविता में स्त्री की चेतना संवेदनशील, आत्मानुभूति से परिपूर्ण और आंतरिक वेदना से संचालित दिखाई देती है। यह अध्ययन इस निष्कर्ष पर पहुँचता है कि दोनों कवियों ने भिन्न दृष्टिकोणों के माध्यम से स्त्री-अस्मिता के विविध आयामों को उजागर किया है, जो आधुनिक हिंदी साहित्य में स्त्री-विमर्श को सशक्त आधार प्रदान करते हैं।

कुंजी शब्द : स्त्री-अस्मिता, स्त्री-चेतना, निराला, महादेवी वर्मा, आधुनिक हिंदी कविता, तुलनात्मक अध्ययन

प्रस्तावना

आधुनिक हिंदी साहित्य में स्त्री-अस्मिता का विमर्श एक केंद्रीय और बहुआयामी बौद्धिक प्रवृत्ति के रूप में विकसित हुआ है, जिसने साहित्यिक अभिव्यक्ति को न केवल समृद्ध किया है, बल्कि सामाजिक संरचनाओं की आलोचनात्मक पुनर्व्याख्या का भी मार्ग प्रशस्त किया है। स्त्री-अस्मिता का प्रश्न केवल स्त्री-पुरुष समानता तक सीमित नहीं है, बल्कि यह स्त्री के अस्तित्व, उसकी आत्म-चेतना, सामाजिक स्थिति, सांस्कृतिक पहचान तथा अधिकारों से गहराई से जुड़ा हुआ है। भारतीय समाज की पारंपरिक पितृसत्तात्मक संरचना ने लंबे समय तक स्त्री को एक सीमित और नियंत्रित भूमिका में बाँधकर रखा, जिसके परिणामस्वरूप उसकी अभिव्यक्ति, स्वतंत्रता और निर्णय-क्षमता पर अनेक प्रकार के प्रतिबंध लगे। ऐसे परिप्रेक्ष्य में साहित्य, विशेषकर कविता, स्त्री के अनुभवों और उसकी अंतर्व्यथा को व्यक्त करने का एक सशक्त माध्यम बनकर उभरा।

हिंदी साहित्य के इतिहास में छायावाद का कालखंड (1918–1936) एक महत्वपूर्ण मोड़ के रूप में देखा जाता है, जिसमें व्यक्तिवाद, संवेदनशीलता और आत्मानुभूति को विशेष महत्व मिला। इस युग में स्त्री की अभिव्यक्ति केवल एक सौंदर्यात्मक या प्रेरणास्रोत के रूप में सीमित नहीं रही, बल्कि वह एक स्वतंत्र व्यक्तित्व के रूप में सामने आई। इस परिवर्तनशील साहित्यिक परिदृश्य में सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' और महादेवी वर्मा जैसे रचनाकारों ने स्त्री-अस्मिता के प्रश्न को नए दृष्टिकोणों से प्रस्तुत किया। निराला की दृष्टि में स्त्री एक सामाजिक संघर्ष की प्रतिनिधि है, जो शोषण और असमानता के विरुद्ध आवाज उठाती है, जबकि महादेवी वर्मा की दृष्टि में स्त्री एक आत्मसंवेदी और अंतर्मुखी सत्ता है, जो अपने अस्तित्व की खोज में निरंतर प्रयासरत रहती है।

स्त्री-अस्मिता की अवधारणा को समझने के लिए यह आवश्यक है कि हम इसे केवल साहित्यिक अभिव्यक्ति के रूप में न देखें, बल्कि इसे सामाजिक, ऐतिहासिक और सांस्कृतिक संदर्भों में भी विश्लेषित करें। औपनिवेशिक काल के

दौरान और उसके बाद भारतीय समाज में शिक्षा के प्रसार, सामाजिक सुधार आंदोलनों तथा राष्ट्रीय चेतना के विकास ने स्त्री की स्थिति में महत्वपूर्ण परिवर्तन लाए। इन परिवर्तनों का प्रभाव साहित्य पर भी पड़ा, जहाँ स्त्री अब केवल करुणा या सौंदर्य की प्रतीक नहीं रही, बल्कि वह अपने अधिकारों और पहचान के प्रति सजग एक सक्रिय व्यक्तित्व के रूप में उभरने लगी।

निराला और महादेवी वर्मा की काव्य-रचनाएँ इस संदर्भ में अत्यंत महत्वपूर्ण हैं, क्योंकि दोनों ही कवियों ने स्त्री को केंद्र में रखकर उसकी चेतना के विभिन्न आयामों को उद्घाटित किया है। निराला की कविताओं में स्त्री का चित्रण सामाजिक यथार्थ से जुड़ा हुआ है, जहाँ वह श्रम, संघर्ष और विद्रोह की प्रतीक बनकर सामने आती है। दूसरी ओर, महादेवी वर्मा की कविताओं में स्त्री का स्वर अधिक सूक्ष्म, आत्मनिष्ठ और भावनात्मक है, जो उसकी आंतरिक पीड़ा, संवेदनशीलता और आत्मान्वेषण को अभिव्यक्त करता है। इस प्रकार, दोनों कवियों की काव्य-दृष्टि स्त्री-अस्मिता के बाह्य और आंतरिक दोनों पक्षों को समाहित करती है।

वर्तमान समय में स्त्री-विमर्श ने वैश्विक स्तर पर एक सशक्त बौद्धिक आंदोलन का रूप ले लिया है, जिसमें लैंगिक समानता, अधिकारों की स्थापना और सामाजिक न्याय जैसे मुद्दे प्रमुखता से उठाए जा रहे हैं। इस संदर्भ में आधुनिक हिंदी कविता का पुनर्पाठ अत्यंत प्रासंगिक हो जाता है, क्योंकि यह हमें यह समझने में सहायता करता है कि स्त्री-अस्मिता की अवधारणा किस प्रकार विकसित हुई और विभिन्न साहित्यिक दृष्टिकोणों में इसे किस प्रकार अभिव्यक्त किया गया। प्रस्तुत शोध इसी दिशा में एक प्रयास है, जिसमें निराला और महादेवी वर्मा की कविताओं के माध्यम से स्त्री-चेतना के विविध रूपों का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है, ताकि स्त्री-अस्मिता के प्रश्न को एक व्यापक और समग्र परिप्रेक्ष्य में समझा जा सके।

इस प्रकार, यह अध्ययन न केवल साहित्यिक विश्लेषण तक सीमित है, बल्कि यह स्त्री-विमर्श के व्यापक सामाजिक और वैचारिक संदर्भों को भी समाहित करता है, जिससे आधुनिक हिंदी साहित्य में स्त्री-अस्मिता की भूमिका और उसकी प्रासंगिकता को अधिक स्पष्ट रूप से समझा जा सके।

साहित्य समीक्षा

आधुनिक हिंदी साहित्य में स्त्री-अस्मिता और स्त्री-चेतना पर आधारित साहित्यिक विमर्श ने विगत कुछ दशकों में एक सशक्त वैचारिक रूप ग्रहण किया है। इस क्षेत्र में विभिन्न विद्वानों, आलोचकों और साहित्यकारों ने स्त्री के अनुभवों, उसकी सामाजिक स्थिति, मनोवैज्ञानिक अंतर्द्वंद्व तथा सांस्कृतिक प्रतिबंधों का गहन अध्ययन प्रस्तुत किया है। साहित्य समीक्षा का उद्देश्य उपलब्ध शोध और विचारधाराओं का आलोचनात्मक विश्लेषण करते हुए यह समझना है कि निराला और महादेवी वर्मा की काव्य-रचनाओं में स्त्री-अस्मिता को किस प्रकार व्याख्यायित किया गया है तथा इस विषय में किन-किन शोध-रिक्तियों की पहचान की जा सकती है।

नारीवादी साहित्यिक सिद्धांत के संदर्भ में सिमोन द बोउवार की कृति स्त्री-अस्मिता के अध्ययन का आधारभूत ग्रंथ मानी जाती है, जिसमें स्त्री को "दूसरा" के रूप में परिभाषित किया गया है। इसी प्रकार वर्जीनिया वूल्फ की स्त्री की रचनात्मक स्वतंत्रता और आर्थिक स्वायत्तता के प्रश्न को प्रमुखता से उठाती है। इन पाश्चात्य सिद्धांतों ने भारतीय साहित्यिक आलोचना को भी प्रभावित किया है, जिसके परिणामस्वरूप हिंदी साहित्य में स्त्री-विमर्श एक सैद्धांतिक आधार के साथ विकसित हुआ। भारतीय संदर्भ में प्रभा खेतान, मृणाल पांडे, नंदिनी सुंदर तथा गायत्री चक्रवर्ती स्पिवाक जैसे विद्वानों ने स्त्री की सामाजिक स्थिति, लैंगिक असमानता और सांस्कृतिक वर्चस्व के प्रश्नों पर महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

हिंदी साहित्य में छायावादी युग के कवियों पर अनेक आलोचकों ने अध्ययन किया है, जिनमें नामवर सिंह, रामविलास शर्मा और विश्वनाथ त्रिपाठी प्रमुख हैं। नामवर सिंह ने छायावाद को "आत्मानुभूति का युग" बताते हुए उसमें व्यक्तिवाद और संवेदनशीलता की प्रधानता को रेखांकित किया है। रामविलास शर्मा ने निराला की काव्य-दृष्टि को सामाजिक

यथार्थ और प्रगतिशील चेतना से जोड़ते हुए यह स्पष्ट किया कि उनकी कविताओं में स्त्री केवल सौंदर्य की प्रतीक नहीं, बल्कि सामाजिक परिवर्तन की वाहक है। 'वह तोड़ती पत्थर' जैसी कविताओं के विश्लेषण में यह दृष्टिकोण विशेष रूप से परिलक्षित होता है, जहाँ स्त्री श्रम और संघर्ष का प्रतीक बनकर उभरती है।

महादेवी वर्मा के संदर्भ में अनेक आलोचकों ने उनकी काव्य-संवेदना और स्त्री-चेतना का विश्लेषण किया है। हजारी प्रसाद द्विवेदी ने महादेवी वर्मा की कविता को "वेदना की साधना" कहा है, जिसमें स्त्री के अंतर्मन की सूक्ष्म अनुभूतियों का अत्यंत मार्मिक चित्रण मिलता है। नंददुलारे वाजपेयी ने उनकी काव्य-शैली को रहस्यवादी और आध्यात्मिक प्रवृत्ति से जोड़ते हुए यह बताया कि उनकी कविता में स्त्री की चेतना आत्मान्वेषण और भावनात्मक गहराई से परिपूर्ण है। इसके अतिरिक्त, आधुनिक आलोचकों ने यह भी इंगित किया है कि महादेवी वर्मा की स्त्री-चेतना केवल करुणा तक सीमित नहीं है, बल्कि उसमें आत्मसम्मान और स्वतंत्र अस्तित्व की खोज भी अंतर्निहित है।

समकालीन शोध (विशेषतः 2020 के बाद) में स्त्री-विमर्श को एक अंतःविषय दृष्टिकोण से देखा जा रहा है, जिसमें साहित्य, समाजशास्त्र, मनोविज्ञान और जेंडर स्टडीज का समन्वय किया गया है। हाल के अध्ययनों में यह पाया गया है कि निराला और महादेवी वर्मा की रचनाएँ आज भी प्रासंगिक हैं, क्योंकि वे स्त्री के अनुभवों को ऐसे रूप में प्रस्तुत करती हैं जो वर्तमान सामाजिक संदर्भों से भी जुड़ते हैं। उदाहरणतः, कुछ शोधों में निराला की कविताओं को श्रमिक वर्ग की स्त्रियों के संदर्भ में पुनर्पाठ किया गया है, जबकि महादेवी वर्मा की कविताओं को स्त्री की मानसिक स्वास्थ्य और भावनात्मक अभिव्यक्ति के दृष्टिकोण से विश्लेषित किया गया है।

हालाँकि, उपलब्ध साहित्य में कुछ महत्वपूर्ण शोध-रिक्तियाँ भी स्पष्ट रूप से दिखाई देती हैं। अधिकांश अध्ययनों में निराला और महादेवी वर्मा की स्त्री-चेतना का पृथक-पृथक विश्लेषण किया गया है, परंतु तुलनात्मक दृष्टिकोण से इन दोनों कवियों की काव्य-दृष्टि का समग्र अध्ययन अपेक्षाकृत कम हुआ है। इसके अतिरिक्त, स्त्री-अस्मिता के बाह्य (सामाजिक) और आंतरिक (मनोवैज्ञानिक/भावनात्मक) आयामों को एकीकृत रूप में विश्लेषित करने वाले शोध भी सीमित हैं। इसी प्रकार, आधुनिक नारीवादी सिद्धांतों के आलोक में इन कवियों की पुनर्व्याख्या की भी पर्याप्त आवश्यकता है।

अतः प्रस्तुत अध्ययन इन शोध-रिक्तियों को ध्यान में रखते हुए निराला और महादेवी वर्मा की कविताओं में स्त्री-अस्मिता के विविध आयामों का तुलनात्मक एवं आलोचनात्मक विश्लेषण करता है। यह न केवल पूर्ववर्ती शोधों को समाहित करता है, बल्कि एक नवीन दृष्टिकोण प्रस्तुत करते हुए यह स्पष्ट करता है कि दोनों कवियों की काव्य-चेतना किस प्रकार स्त्री-विमर्श को समृद्ध और विस्तृत बनाती है।

निराला की कविता में स्त्री-अस्मिता – विस्तृत, गहन एवं आलोचनात्मक विश्लेषण

सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' की काव्य-दृष्टि आधुनिक हिंदी साहित्य में स्त्री-अस्मिता के विमर्श को एक नई वैचारिक ऊँचाई प्रदान करती है। उनकी कविता में स्त्री केवल सौंदर्य, प्रेम या करुणा की प्रतीक नहीं है, बल्कि वह सामाजिक संरचना के भीतर सक्रिय रूप से संघर्ष करने वाली, अपनी पहचान निर्मित करने वाली और पितृसत्तात्मक व्यवस्था को चुनौती देने वाली एक सशक्त सत्ता के रूप में उपस्थित होती है। निराला का दृष्टिकोण अपने समय से आगे का है, क्योंकि वे स्त्री को किसी आदर्शीकृत या प्रतीकात्मक रूप में नहीं, बल्कि यथार्थ के ठोस धरातल पर देखना और प्रस्तुत करना चाहते हैं।

निराला की कविता में स्त्री-अस्मिता का सबसे प्रमुख आयाम यथार्थवाद के माध्यम से व्यक्त होता है। उनकी प्रसिद्ध कविता *'वह तोड़ती पत्थर'* इस संदर्भ में अत्यंत महत्वपूर्ण है, जहाँ स्त्री श्रमशीलता, संघर्ष और अस्तित्व-निर्माण का जीवंत प्रतीक बन जाती है। इस कविता में स्त्री न तो करुणा की पात्र बनती है और न ही किसी रोमानी कल्पना का हिस्सा; बल्कि वह अपने श्रम के माध्यम से अपनी अस्मिता को स्थापित करती है। यह चित्रण स्त्री को "वस्तु" के रूप

में देखने की परंपरागत प्रवृत्ति का खंडन करता है और उसे एक "कर्ता" के रूप में स्थापित करता है, जो अपने जीवन की दिशा स्वयं निर्धारित करती है।
निराला की स्त्री-अस्मिता का एक अन्य महत्वपूर्ण पक्ष पितृसत्ता के विरुद्ध प्रतिरोध है। उनकी कविताओं में स्त्री सामाजिक बंधनों, रूढ़ियों और लैंगिक असमानताओं के विरुद्ध विद्रोह करती हुई दिखाई देती है। यह विद्रोह केवल बाहरी सामाजिक ढाँचों के विरुद्ध नहीं है, बल्कि यह मानसिक और सांस्कृतिक स्तर पर भी कार्य करता है। निराला स्त्री को एक ऐसी चेतना से संपन्न दिखाते हैं, जो अपने अधिकारों और स्वतंत्रता के प्रति सजग है। इस प्रकार, उनकी कविता स्त्री को एक जागरूक और आत्मनिर्भर इकाई के रूप में प्रस्तुत करती है, जो अपने अस्तित्व की रक्षा और विस्तार के लिए संघर्षरत है।

इसके साथ ही, निराला की काव्य-दृष्टि में वर्ग-चेतना और स्त्री-अस्मिता का गहरा अंतर्संबंध देखने को मिलता है। उन्होंने विशेष रूप से श्रमिक वर्ग की स्त्रियों को अपनी कविता का केंद्र बनाया, जो दोहरे शोषण—एक ओर वर्गीय और दूसरी ओर लैंगिक—का सामना करती हैं। यह दृष्टिकोण उन्हें मार्क्सवादी और समाजवादी विचारधाराओं के निकट लाता है, जहाँ स्त्री के प्रश्न को केवल लैंगिक दृष्टि से नहीं, बल्कि आर्थिक और सामाजिक संरचनाओं के संदर्भ में भी देखा जाता है। निराला की स्त्री अपने श्रम के माध्यम से न केवल जीविका अर्जित करती है, बल्कि अपनी पहचान और आत्मसम्मान को भी स्थापित करती है।

निराला की कविता में स्त्री-अस्मिता का एक और महत्वपूर्ण आयाम मानवीय गरिमा है। उनकी रचनाओं में स्त्री को किसी भी प्रकार की दया या सहानुभूति का पात्र बनाकर प्रस्तुत नहीं किया गया है, बल्कि उसे एक गरिमामयी व्यक्तित्व के रूप में चित्रित किया गया है, जो अपने अस्तित्व के प्रति सजग और स्वाभिमानी है। यह दृष्टिकोण स्त्री को 'पीड़िता' की संकीर्ण छवि से बाहर निकालकर उसे एक सशक्त और स्वायत्त व्यक्तित्व के रूप में स्थापित करता है। निराला के यहाँ स्त्री अपनी परिस्थितियों से जूझते हुए भी अपने आत्मसम्मान को बनाए रखती है, जो उसकी अस्मिता का मूल आधार बनता है।

इसके अतिरिक्त, निराला की कविता में स्त्री-अस्मिता का संबंध सामाजिक परिवर्तन की अवधारणा से भी गहराई से जुड़ा हुआ है। उनकी काव्य-दृष्टि केवल यथार्थ का चित्रण नहीं करती, बल्कि वह समाज में परिवर्तन की आवश्यकता को भी रेखांकित करती है। स्त्री के माध्यम से निराला एक ऐसे समाज की कल्पना करते हैं, जहाँ समानता, न्याय और स्वतंत्रता के मूल्य स्थापित हों। इस प्रकार, उनकी कविता केवल साहित्यिक अभिव्यक्ति नहीं, बल्कि एक सामाजिक और वैचारिक हस्तक्षेप भी है, जो स्त्री-विमर्श को एक व्यापक सामाजिक आंदोलन के रूप में प्रस्तुत करती है।

निराला की स्त्री-अस्मिता को यदि नारीवादी सिद्धांतों के आलोक में देखा जाए, तो यह स्पष्ट होता है कि उनकी काव्य-दृष्टि उदारवादी और समाजवादी नारीवाद दोनों से प्रभावित प्रतीत होती है। वे स्त्री की स्वतंत्रता, शिक्षा और समानता की वकालत करते हैं, जो उदारवादी नारीवाद के मूल तत्व हैं, वहीं श्रमिक स्त्रियों के चित्रण के माध्यम से वे वर्गीय असमानताओं को भी उजागर करते हैं, जो समाजवादी नारीवाद के अनुरूप है। इस प्रकार, निराला की कविता स्त्री-अस्मिता के बहुस्तरीय और अंतर्संबंधित स्वरूप को प्रस्तुत करती है।

समग्रतः, निराला की कविता में स्त्री-अस्मिता एक गतिशील, संघर्षशील और परिवर्तनकारी अवधारणा के रूप में उभरती है। उन्होंने स्त्री को केवल साहित्यिक सौंदर्य के प्रतीक के रूप में नहीं, बल्कि सामाजिक यथार्थ के सक्रिय सहभागी के रूप में चित्रित करते हुए हिंदी साहित्य में स्त्री-विमर्श को एक नई दिशा प्रदान की। उनकी काव्य-दृष्टि आज भी प्रासंगिक है, क्योंकि यह हमें यह समझने में सहायता करती है कि स्त्री की वास्तविक स्वतंत्रता केवल वैचारिक स्तर पर नहीं, बल्कि सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक संरचनाओं में परिवर्तन के माध्यम से ही संभव है।

तुलनात्मक विश्लेषण

सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' और महादेवी वर्मा की काव्य-दृष्टि में स्त्री-अस्मिता का स्वरूप बहुआयामी है, किंतु दोनों के अभिव्यक्ति-तरीकों, संवेदनात्मक धरातलों और वैचारिक आग्रहों में स्पष्ट भिन्नताएँ तथा कुछ महत्वपूर्ण समानताएँ भी दृष्टिगत होती हैं। यह तुलनात्मक विश्लेषण न केवल उनके काव्य-रूपों के अंतर को स्पष्ट करता है, बल्कि यह भी दर्शाता है कि आधुनिक हिंदी कविता में स्त्री-विमर्श किस प्रकार विविध दिशाओं में विकसित हुआ है।
सबसे पहले, दोनों कवियों की दृष्टि का आधारभूत अंतर उनके स्त्री-चित्रण के स्वरूप में दिखाई देता है। निराला की कविता में स्त्री मुख्यतः बाह्य यथार्थ से जुड़ी हुई है—वह सामाजिक संरचनाओं, वर्गीय विषमताओं और श्रम-संघर्ष से प्रत्यक्ष रूप से संबद्ध है। इसके विपरीत, महादेवी वर्मा की स्त्री आंतरिक संसार की प्रतिनिधि है, जो अपने मनोभावों, संवेदनाओं और आत्मान्वेषण के माध्यम से अपनी अस्मिता की खोज करती है। इस प्रकार, जहाँ निराला की स्त्री "बाह्य संघर्ष" का प्रतीक है, वहीं महादेवी की स्त्री "आंतरिक संघर्ष" का प्रतिनिधित्व करती है।

दूसरे, अभिव्यक्ति के स्वर के स्तर पर भी दोनों कवियों में महत्वपूर्ण भिन्नता है। निराला की भाषा अपेक्षाकृत प्रत्यक्ष, यथार्थवादी और प्रगतिशील चेतना से ओत-प्रोत है। उनकी कविता में स्त्री का चित्रण ठोस सामाजिक संदर्भों में किया गया है, जो पाठक को सामाजिक अन्याय और असमानता के प्रति जागरूक बनाता है। दूसरी ओर, महादेवी वर्मा की भाषा प्रतीकात्मक, सांकेतिक और काव्यात्मक सौंदर्य से परिपूर्ण है। उनकी कविता में स्त्री की वेदना और संवेदना को रूपक, बिंब और प्रतीकों के माध्यम से व्यक्त किया गया है, जिससे उसका स्वर अधिक सूक्ष्म और अंतर्मुखी बन जाता है।

तीसरे, स्त्री-अस्मिता के आयामों की दृष्टि से भी दोनों कवियों का दृष्टिकोण भिन्न है। निराला की स्त्री-अस्मिता सामाजिक समानता, श्रम, अधिकार और स्वतंत्रता के प्रश्नों से जुड़ी हुई है। वे स्त्री को एक ऐसे व्यक्तित्व के रूप में प्रस्तुत करते हैं जो अपने अधिकारों के लिए संघर्ष करता है और सामाजिक परिवर्तन का माध्यम बनता है। इसके विपरीत, महादेवी वर्मा की स्त्री-अस्मिता आत्मिक अनुभव, भावनात्मक गहराई और अस्तित्व की खोज से संबंधित है। उनकी कविता में स्त्री अपने भीतर की पीड़ा, अकेलेपन और संवेदनाओं के माध्यम से अपनी पहचान निर्मित करती है।

चौथे, वेदना और संघर्ष की प्रकृति के संदर्भ में भी दोनों कवियों की दृष्टि अलग है। निराला की स्त्री का संघर्ष बाह्य परिस्थितियों—जैसे गरीबी, श्रम, सामाजिक अन्याय—से जुड़ा हुआ है, जबकि महादेवी की स्त्री का संघर्ष अधिक आंतरिक और मनोवैज्ञानिक है। महादेवी वर्मा की कविताओं में स्त्री की वेदना एक प्रकार की आध्यात्मिक अनुभूति का रूप ले लेती है, जो उसे विशिष्ट बनाती है। इस प्रकार, निराला की स्त्री का संघर्ष सामाजिक यथार्थ से उत्पन्न है, जबकि महादेवी की स्त्री का संघर्ष आत्मिक अनुभूति से प्रेरित है।

हालाँकि, इन भिन्नताओं के बावजूद, दोनों कवियों के बीच कुछ महत्वपूर्ण समानताएँ भी विद्यमान हैं। दोनों ही स्त्री को एक स्वतंत्र और स्वायत्त व्यक्तित्व के रूप में स्वीकार करते हैं और उसकी गरिमा तथा अस्तित्व को महत्व देते हैं। दोनों की कविताओं में स्त्री केवल एक 'वस्तु' नहीं है, बल्कि वह एक 'विषय' (subject) है, जिसकी अपनी चेतना, संवेदना और पहचान है। इसके अतिरिक्त, दोनों कवि स्त्री की पीड़ा और संघर्ष को गंभीरता से प्रस्तुत करते हैं, जिससे उनके काव्य में स्त्री-विमर्श का एक सशक्त स्वर उभरता है।

इसके अलावा, यदि इस तुलनात्मक अध्ययन को नारीवादी दृष्टिकोण से देखा जाए, तो यह स्पष्ट होता है कि निराला और महादेवी वर्मा दोनों ही स्त्री-अस्मिता को अपने-अपने तरीके से पुनर्परिभाषित करते हैं। निराला की कविता समाजवादी और उदारवादी नारीवाद के निकट दिखाई देती है, जहाँ स्त्री के सामाजिक और आर्थिक अधिकारों पर बल दिया गया है। वहीं महादेवी वर्मा की कविता अस्तित्ववादी और सांस्कृतिक नारीवाद के अधिक समीप है, जहाँ स्त्री के आत्मिक अनुभव और भावनात्मक संसार को प्रमुखता दी गई है।

अंततः, यह कहा जा सकता है कि निराला और महादेवी वर्मा की काव्य-दृष्टियाँ परस्पर विरोधी नहीं, बल्कि पूरक हैं। जहाँ निराला स्त्री-अस्मिता के बाह्य और सामाजिक पक्ष को उजागर करते हैं, वहीं महादेवी वर्मा उसके आंतरिक और

भावनात्मक आयामों को सामने लाती हैं। दोनों की काव्य-चेतना मिलकर स्त्री-अस्मिता की एक समग्र और व्यापक तस्वीर प्रस्तुत करती है, जो आधुनिक हिंदी साहित्य में स्त्री-विमर्श को गहराई और विविधता प्रदान करती है। इस प्रकार, यह तुलनात्मक विश्लेषण यह सिद्ध करता है कि स्त्री-अस्मिता को समझने के लिए बाह्य और आंतरिक दोनों ही दृष्टिकोणों का समन्वय आवश्यक है।

संदर्भ

1. निराला, सूर्यकांत त्रिपाठी. (1997). *निराला रचनावली* (खंड 1–8). राजकमल प्रकाशन।
2. वर्मा, महादेवी. (2000). *यामा*. लोकभारती प्रकाशन।
3. शर्मा, रामविलास. (2006). *निराला की साहित्य साधना*. राजकमल प्रकाशन।
4. सिंह, नामवर. (2010). *छायावाद*. राजकमल प्रकाशन।
5. द्विवेदी, हजारी प्रसाद. (2003). *हिंदी साहित्य की भूमिका*. राजकमल प्रकाशन।
6. वाजपेयी, नंददुलारे. (2008). *हिंदी साहित्य: बीसवीं शताब्दी*. लोकभारती प्रकाशन।
7. पांडेय, मृणाल. (2003). *स्त्री: देह की राजनीति से देश की राजनीति तक*. राजकमल प्रकाशन।
8. खेतान, प्रभा. (2010). *स्त्री उपेक्षिता*. वाणी प्रकाशन।